ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

शब्द–प्रमाण : एक दार्शनिक विवेचन

Testimony: A Philosophical Critique

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

ललन कुमार
अतिथि व्याख्याता,
दर्शन शास्त्र विभाग,
राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय,
सहरसा, बिहार, भारत

सारांश

शब्द अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन होने के साथ–साथ एक स्वतंत्र प्रमाण है। भारतीय दर्शन में वेदों को शब्द प्रमाण का महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है। साथ ही साथ सिद्ध पुरुषों के द्वारा कही गई बातों को भी शब्द प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। शब्द एक अमूल्य निधि है। शब्दों के द्वारा ही मनुष्य अपने व्यवहारिक जीवन को सुगम बनाता है। यह विचारों के आदान–प्रदान का महत्वपूर्ण माध्यम होने के साथ ही प्रत्यक्ष औरअनुमान के बाद एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

The word is an independent proof along with being an important means of expression. Vedas have been considered as an important source of word proof in Indian philosophy. At the same time, the words spoken by siddha men have also been accepted as word proof. The word is an invaluable fund. It is through words that a man facilitates his practical life. It is an important means of exchange of ideas as well as an important proof after direct and permissible.

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञानमीमांसा, प्रमाण–शास्त्र, 'शब्द, भारतीय दर्शन ।
Indian Epistemology, Scripture, Words, Indian Philosophy.

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञानमीमांसा में प्रमाणो की एक लंबी श्रृंखला देखने को मिलती है। प्रमाण–शास्त्र भारतीय दर्शन मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रमाणें के द्वारा ही हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। प्रमाणों मे जिस प्रकार प्रत्यक्ष तथा अनुमान अतना महत्व रखते है, ठीक उसी प्रकार शब्द–प्रमाण का भी विशेष महत्व है। भारतीय दर्शन में चार्वक, बौद्व तथा वैशेषिक के अतिरिक्त अन्य सभी दर्शनो में 'शब्द' को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकृत किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय दर्शन में प्रमाणों की श्रृंखला में शब्द प्रमाण का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह मानव जाति के लिए ज्ञान प्राप्ति के साधन के साथ–साथ अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। शब्द प्रमाण को उद्धृत करने का हमारा उद्देश्य भारतीय दर्शन के विभिन्न शाखाओं द्वारा शब्द प्रमाण के विषय में दिए गए महत्वपूर्ण विचारों को प्रकट करना तथा इसके महत्व को उजागर करना है।

विषय विस्तार

व्याकरण दर्शन मे भी शब्द ज्ञान आदि की चर्चा देखने को मिलती है। लेकिन यहाँ यह बात ध्यान रखने योग्य है कि प्रत्येक शब्द अथवा वाक्य तथा उसके निर्दिष्ट अर्थ को प्रमाण रूप मे स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस रूप में प्रत्येक वाक्य 'शब्द प्रमाण' नही है। शब्दान्तर से शब्द प्रमाण एक विशेष प्रकार के वाक्य से उत्पन्न ज्ञान है। क्योंकि प्रमा के साधन को प्रमाण कहा जाता है और प्रमा का अर्थ है यथार्थ ज्ञान इसलिए प्रत्येक शब्द अथवा वाक्य को प्रमाण नहीं माना जा सकता है।

चार्वाक शब्द को ज्ञान का साधन नहीं मानते है। उसके अनुसार प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है। उनका कहना है कि शब्द हमें अयथार्थ ज्ञान प्रदान करता है। शब्द के विरूद्व चार्वाक अनेक आक्षेप उपास्थित करते है। यथा शब्द द्वारा ज्ञान तभी प्राप्त होता है जब कोई विश्वास–योग्य व्यक्ति उपलब्ध हो । शब्द–ज्ञान के लिए आप्त–पुरूष का मिलना नितान्त आवश्यक है। आप्त–पुरूष मिलने मे कठिनाई है। फिर अगर आप्त–पुरूष मिल भी जाये तो हम कैसे जान सकते है कि अमुक व्यक्ति आप्त–पुरूष है तथा उसके वचन विश्वास–योग्य है। चार्वाक वैदिक शब्दों को भी प्रमाण के रूप मे स्वीकार नही करता है। चार्वाक ने वेद के प्रति घोर निन्दा का प्रदर्शन किया है। [1]

जैन दर्शनों दो प्रकार के लौकिक ज्ञान की चर्चा की गई है। इन्हे मति और श्रुत कहते है। साधारणतः मतिज्ञान उसे कहते हैं जो इन्द्रिय तथा मन के द्वारा प्राप्त होता है। इसके अन्तर्गत व्यावहारिक अपरोक्ष ज्ञान प्रत्यभिज्ञा अनुमान आते है। श्रुत शब्द ज्ञान को कहते है। ज्ञान की उत्पति सुने हुए शब्दों से होती हैं। यह आप्त–वचनों तथा प्रामाणिक ग्रंथो को देखे बिना श्रुत ज्ञान नही हो सकता । अतः इसके लिए इन्द्रिय–ज्ञान का होना आवश्यक है। सर्वज्ञ तीर्थकरो के उपदेश सर्वश्रेष्ठ श्रुत–ज्ञान है। जैन दर्शन का साहित्य काफी समृद्व है। [2]

बौद्व दो ही प्रमाण मानते है– प्रत्यक्ष और अनुमान। अन्य प्रमाणों का अन्तर्भाव इन्ही प्रमाणों के अन्तर्गत हो जाता है। बौद्व मतानुसार वस्तु का कल्पना रहित नाम जाति, गुण आदि से विलग ज्ञान प्रत्यक्ष है तथा नाम जाति आदि की योजना से युक्त समस्त ज्ञान अनुमान है। स्पष्टतः शब्द जो वस्तु का नाम जाति आदि निर्धारित करते है, बौद्व मतानुसार अनुमान प्रमाण ही है। [3]

वैशेषिकों ने भी शब्द का अन्तर्भाव अनुमान में करते हुए कहा है कि शाब्दी प्रमा में भी अनुमान की ही भाँति परोक्ष विषय का ज्ञान प्रत्यक्ष के आधार पर प्राप्त किया जाता है अतएव शाब्दी प्रमा प्रकारान्तर से अनुमिति ही है। इस विषय मे वैशेषिकों का कहना है कि शब्द का अनुमान में अन्तर्भाव समान विधि के कारण किया जाता है। जैसे अनुमान में व्याप्ति ग्रह, लिंग ज्ञान तथा व्याप्ति स्मरण से अनुमिति उत्पन्न होती है उसी प्रकार शब्द प्रमाण मे संकेत ग्रह, वाक्य श्रवण पदार्थ स्मृति से शब्द बोध होता है। इसलिए अनुमान तथा शब्द की विधि समान होने से शब्द का अनुमान में अन्तर्भाव किया जाता है। [4]

न्याय प्रमाणमीमांसा में प्रत्यक्ष, अनुमान और उपमान के अनन्तर शब्द ज्ञान का निरूपण करते हुए न्याय सूत्र के प्रणेता महर्षि गौतम ने कहा है कि '' आप्त पुरूष के उपदेश ''शब्द है।'' तर्कभाषाकार केशव मिश्र के अनुसार शब्द आप्त वाक्य है। विश्वासी पुरूष के कथन को 'आप्त वचन' कहा जाता है। कोई व्यक्ति आप्त पुरूष तभी कहा जाता है जब उसके ज्ञान यथार्थ ही। आप्त पुरूष कहलाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने ज्ञान को दूसरे की भलाई के लिए व्यवहार करता हो। आप्त पुरूषों के उपदेशो को ही शब्द कहा जाता है। वेद पुराण, ऋषि, धर्म शास्त्र इत्यादि से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द–ज्ञान कहा जाता है। [5]

न्याय दर्शन मे शब्दों का विभजन दो दृष्टि कोणों से हुआ है। सर्वप्रथम शब्द को दो हिस्सों में बाँटा गया है–(1) दृष्टार्थ (2) अदृष्टार्थ। दृष्टार्थ शब्द का अर्थ है ऐसे शब्द का ज्ञान जो संसार की प्रत्यक्ष की जा सकने वाली वस्तुओं से सम्बन्धित है। उदाहरण स्वरू कोई व्यक्ति हमारे सामने विदेशी व्यक्तियों के रहन–सहन की चर्चा करता है दृस्टार्थ शब्द कहलाते है। अदृष्टार्थ शब्द वे है जो प्रत्यक्ष नहीं की जानेवाली वस्तु से सम्बन्धित हो। ऐसे शब्दों के उदाहरण धर्म–अधर्म, पाप–पुण्य, नीति–दुराचार आदि से सम्बन्धित बातें है। दूसरे दृष्टि कोण से शब्द का विभाजन दो वर्गो मे हुआ है–(1) वैदिक शब्द ;2) लौकिक शब्द। वेद की बातों को वैदिक शब्दकहा गया है। वेद भारत का प्राचीन साहित्य है। वेद की रचना ईश्वर ने की है। अतः वेद मे वर्णित शब्द को संशयहीन तथा विश्वासपूर्ण माना जाता है। साधारण मनुष्य के शब्द को लौकिक शब्द कहतें है। इनके निर्माता मनुष्य होते है। अतः लौकिक शब्द निरन्तर सत्य होने का दावा नही कर सकते ।[6]

सांख्य दर्शन में प्रत्यक्ष तथा अनुमान के अतिरिक्त शब्द को भी प्रामाणिकता मिली है। बाचस्पति मिश्र का कहना है कि यदि सिर्फ प्रत्यक्ष को प्रमाण माना जाय तो व्यावहारिक जीवन असंभव हो जायेगा। इसलिए सांख्य में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीनों प्रमाण को माना गया है। सांख्य भी दो प्रकार के शब्दों को मानता है। लौकिक तथा वैदिक शब्द शब्द के प्रकार है। [7]

मीमांसा दर्शन मे भी शब्द को एक स्वतन्त्र प्रमाण के रू में स्वीकार किया गया है। शब्द प्रमाण पौरूषेय और अपौरूषेय भेद से दो प्रकार का होता है। पौरूषेय आप्तवाक्य है; अपौरूषेय वेदवाक्य है। पौरूषेय वाक्य में प्रामाण्य वक्ता की आप्तता के कारण अनुमित होता है। इससे संशय और विपर्यय की सम्भावना रहती है तथा अन्य ज्ञान से कभी इसका बाध भी हो सकता है। किन्तु अपौरूषय वेदवाक्य स्वतः प्रमाण है; नित्य और अपौरूषेय है। वेद किसी पुरूष की कृति नहीं है ; इनका रचयिता कोई नही है, न जीव और न ईश्वर। वेद में न तो आन्तर विरोध हो सकता है और न अन्य ज्ञान से इसके बाधित होने की सम्भावना हो सकती है । प्रभाकर ने केवल अपौरूषेय वेद को शब्द प्रमाण माना ह तथा आप्तवाक्य का अनुमान मे अन्तर्भाव कर दिया है। पुनश्च शब्द या तो सिद्वार्थवाक्य हा सकते है जो हमें सत्य पदार्थो का ज्ञान कराते है ; या विधायक वाक्य हो सकते हैं जो हमें किसी कर्म को करने का या न करने का आदेश देते है। कुमारिल के अनुसार वेदवाक्य विधायक वाक्य है। वेद हमें कर्म करने या न करने का आदेश देता है। वेद के विधिवार तथा अर्थवाद नामक दो भाग किये जा सकते है। इनमें मुख्य भाग विधिवाद है जा कर्मपरक आदेश देता है। अर्थवाद वर्णनात्मक है। प्रभाकर के अनुसार अर्थवाद भी कर्म का सहायक बनकर ही प्रामाणिक हो सकता है। [8]

वेदान्त मत मे शब्द प्रमाण को 'आगम' की संज्ञा दी गई है। वेदान्त परिभाषा में आगाम का निरूपण प्रमाण के चतुर्थ स्थान मं अर्थात प्रत्यक्ष, अनुमान तथा उपमान के अनन्तर किया गया है। 'आगम' की परिभाषा देते हुए वेदान्त परिभाषा में कहा गया है कि जिस वाक्य का तात्पर्य विषय अन्य प्रमाणों से बाधित नहीं होता वह शब्द प्रमाण है। [9]वेदान्त परिभाषाकार के मतानुसार शब्द प्रमाण दो प्रकार के है– लौकिक एवं वैदिक। इनमें वैदिक वाक्य 'अपूर्व' होता है अर्थात अन्य किसी प्रमाण द्वारा ज्ञात नही होता जबकि लौकिक वाक्य जिस अर्थ को बतलाते है वह अर्थ या विषय प्रत्याक्षादि अन्य प्रमाणों द्वारा भी ज्ञेय होता है। इस अर्थ में लौकिक शब्द अपूर्व नही है। [10]

निष्कर्ष

विभ्भिन्न दर्शनो द्वारा शब्द–प्रमाण के विषय में दिये मतो से इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि शब्द–प्रमाण अत्यन्त ही महत्वपूर्ण प्रमाण है। इसके बिना हमारा व्यावहारिक जीवन अत्यन्त कठिन है। इस प्रमाण को न मानने वाले दर्शन निश्चित रूप से किसी न किसी रूप मे

इससे प्रभावित है। चार्वक सिर्फ प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है, फिर भी जो कुछ वह सिद्व करना चाहता है।

उसके लिए शब्द–प्रमाण की ही आवश्यकता है। वैशेषिक और बौद्व ने इसे अनुमान के अन्तर्गत माना है, किंतु अनुमान तथा शब्द–प्रणाम दोनों अलग–अलग है क्योंकि अनुमान व्याप्ति पर आधारित है , जबकि शब्द–प्रणाम आप्त–पुरूष के वचनों पर गौतम बुद्व द्वारा कही गई बातों या उनकें द्वारा दिये गये उपदेशों पर हम अविश्वास नहीं कर सकतें। उनके उपदेश का प्रत्येक शब्द एवं वाक्य विश्वसनीय है। बड़ी संख्या में अनुयायी उनका पालन करते है। इस तरह शब्द–प्रमाण एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। यह अद्वितीय खजाना है जो सम्पूर्ण मानव जाति के ज्ञान में वृद्वि करने में सहायक है तथा मानव को मानव बनाने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भारतीय दर्शन की रूपरेखा– प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ सं– 84–85,*
2. *भारतीय दर्शन, दत एवं चटर्जी, पृष्ठ सं0–103*
3. *भारतीय ज्ञानमीमांसा, नीलिमा सिन्हा, पृष्ठ सं– 185*
4. *वही पृष्ठ संख्या –185*
5. *वही ,पृष्ठ संख्या –179*
6. *भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रोफेसरहरेंद्र प्रसाद सिन्हा ,पृष्ठ संख्या –187*
7. *वही ,पृष्ठ संख्या– 265*
8. *भारतीय दर्शन ,चंद्रधर शर्मा , पृष्ठ संख्या –197*
9. *भारतीय ज्ञान मीमांसा, नीलिमा सिन्हा, पृष्ठ संख्या –183*
10. *वही, पृष्ठ संख्या –184*